प्रियंका पाठक स्नातकी

कक्षा - स्नातक प्रथम वर्ष (प्रतिष्ठा)
सत्र - 2020-2023
पत्र - प्रथम
शीर्षक :- पृथ्वीराज रासो : एक परिचय

पृथ्वीराज रासो : एक परिचय

आदिकाल का संक्रमणकालीन साहित्य विषयवस्तु, नाना प्रवृत्तियों, काव्य रूपों एवं विभिन्न पद्धतियों की दृष्टि से विविधमुखी है। काव्य एवं शिल्पविधान की दृष्टि से इस काल का साहित्य अपने समकालीन संस्कृत साहित्य से निश्चय ही आगे रहा है। राजस्थान के चारण कवियों ने 'चरित काव्य' लिखे जिन्हें वीरगाथाएँ या 'रासो काव्य' कहा गया। आदिकाल के साहित्य में नाना सम्प्रदायगत धर्म व वैराग्य का साहित्य भी लिखा गया। जैसे - जैन साहित्य, नाथ साहित्य एवं बौद्ध साहित्य। पृथ्वीराज रासो आदिकालीन साहित्य की प्रतिनिधि रचना है।

पृथ्वीराज रासो एक विशालकाय ग्रंथ है। इसमें महाकाव्य के सभी लक्षण विद्यमान हैं। पृथ्वीराज रासो के रचयिता चन्दबरदाई हैं, ऐसा प्रसिद्ध है कि ये पृथ्वीराज के साथ वि० सं० 1206 में पैदा हुए थे। कवि चन्दबरदाई पृथ्वीराज चौहान के राजकवि, सामंत और सखा थे। पृथ्वीराज रासो में राष्ट्रीय जीवन पूर्णतः प्रतिबिंबित होता है। इसमें भारतीय सभ्यता और संस्कृति के मूल से परिचय प्राप्त हो जाता है।

साथ ही उसमें भारतीय जीवन का सार दिखाई देता है। इसीलिए कहा जाता है कि, तत्कालीन राष्ट्रीय आदर्शों का प्रतिनिधित्व करने की दृष्टि से 'पृथ्वीराज रासो' एक श्रेष्ठ महाकाव्य है।

'पृथ्वीराज रासो' जितना अधिक महत्वपूर्ण ग्रंथ है उतना ही उसके संबंध में संदेह भी है। ऐतिहासिक घटनाओं और विवरणों, तिथियों, पाठ आदि की दृष्टि से उसमें अनेक संदिग्ध स्थल हैं। फिर भी 'काव्य-सौंदर्य' की दृष्टि से यह अनुपम काव्य है। सभी आलोचकों ने इसके 'काव्य-सौंदर्य' की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। इस ग्रंथ के 60 से भी अधिक संस्करण प्राप्त हुए हैं। इनमें से चार संस्करण निम्न प्रकार से हैं:—

1. वृहत रूपांतर — 16306 छंद
2. मध्यम रूपांतर — 7000 छंद
3. लघु रूपांतर — 3500 छंद
4. लघुतम रूपांतर — 1300 छंद

'पृथ्वीराज रासो' ढाई हजार पृष्ठों का विपुल ग्रंथ है। इसमें 69 समय (सर्ग) हैं। प्राचीन समय से प्रचलित प्रायः सभी छंदों का इसमें व्यवहार हुआ है। मुख्य छंद हैं:— कवित (छप्पय), दूहा (दोहा), तोमर, त्रोटक, गाहा और आर्या। जैसे

कादंबरी के संबंध में प्रसिद्ध है कि उसका पिछला भाग बाणभट्ट के पुत्र ने पूरा किया है, वैसे ही रासो के पिछले भाग का भी चंद के पुत्र जल्हण द्वारा पूर्ण किया गया है। रासो के अनुसार जब शहाबुद्दीन गोरी पृथ्वीराज को कैद कर गजनी ले गया, तब कुछ दिनों पीछे चंद भी वहीं गए। जाते समय कवि अपने पुत्र जल्हण के हाथ में रासो को पूर्ण करने का संकेत किया। पुस्तक देकर उसे पूर्ण करने का संकेत किया। जल्हण के हाथ में रासो सौंपे जाने और उसके पूरे किए जाने का उल्लेख रासो में है –

पुस्तक जल्हण हत्थ दै चलि गज्जन नृपकाज।

रघुनाथचरित हनुमंतकृत भूप भोज उद्धरिय जिमि।
पृथिराजसुजस कवि चंद कृत चंदनंद उद्धरिय तिमि॥

'रासो' में दिए हुए संवतों का ऐतिहासिक तथ्यों के साथ मेल न खाने के कारण विद्वानों के बीच इसकी प्रमाणिकता को लेकर विवाद है। इस रचना की सबसे पुरानी प्रति बीकानेर के राजकीय पुस्तकालय में मिली है। रचना के अंत में पृथ्वीराज द्वारा शब्दवेधी बाण चलाकर गोरी को मारने की बात भी की गई है।

डॉ० मेनका कुमारी
सहायक प्राध्यापक (अतिथि), हिन्दी
पी० एस० एम० कॉलेज, कटौती,
ललित नारायण मिथिला विवि, दरभंगा।